2

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्रीगणेशायनमः॥अथतुलसीदासकृतभरथगीतालिख्यते॥रागजय
श्रीः॥नंदनृहौंछाडिदशस्यंदनजूकोनगरअवधतेआयो॥इतनीकरिप्र
तिहारमहरिसोंकरिमेरोमनभायो॥महाराजब्रजराजजूजोचकएकदु
वारे॥अवधराजरघुवंसनपतिगुनकीरतिपठतपुकारे॥लैलैनाम
१ रामकहनानिधिविहवलवसनविसारे॥देतअसीसरसनिजुकहि
कहिठाढेद्वारतिहारे॥जोकहिकैकुस्यभूपगुनअहईस्पाकुवंसई
राजा १ अजदिलीपरघुदसरथसुमतलकीरतिहाई॥अजहूंवहुतकहतगु
णइनकेकहणसिंधुसदाई॥मैअतानअल्पमतिमेरीकैन्तुकवेहत
कसुआई॥प्रहसुनिनंदअनंदमानदैततछणनिकटबोलायो
अहेसुपाइआईअतहपुरदेआशीसशिरनायो॥कहीपपाविधितव
व्रजपतिसोंपाकारनहींआयो॥महाराजराजाप्रभुमेरोसुन्सोमह

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रतनजटितपहुचीनिजकरकीवागेसहिततुम्हारी॥ कंचनष्यारमोहरमानिकभरि
पहरघुकुलचलिआए॥ रतनीलोकलेनतुमपहिआनहिनअधिकवडाइ॥ बहु
तैसुनहुविदाउढिनोकोपोकनुरघुकुलरीति॥ अधिकनकहोसोहवावाकोमे
रेसत्पप्रतीति॥ ब्रजरानीकीसारीसुन्दरसोठढिनोकोदीजै॥ मुक्तमालचोकी
॥२॥ सोनकीसुतन्योमावरिकीजे॥ जोरजोइमाग्योसोसारसोइदीन्हो भलीभातिस ॥२॥
नमान्यो॥ औरतेवहुतदिपोधनव्रजपतिवडेठोरकोजान्यो॥ दइअसीसव
डेसजगतिपुगचिरजीवहुसुततेरा॥ पदुनन्दनपदुनाथजगतपतिरघु
नन्दनप्रभुमेरो॥ भातिभातिकरिढाढीसमपोजोइमाग्योसोइदीन्हो॥
जनतुलसीकोमनकदानदेजन्मअपाचीकीन्हो॥ जोपापोसोकिपोनेसावृ
रिउगारिलिहोकसुओरो॥ रामकलपचलिरामेलघनकोध्यानवसेमनमेरो
अवदीजैकरिकपानंदहोकोसलेपुरकोवासी॥ तुलसीचरनरेनुसुषवा
हतदपासिंधुसुषरासी॥१ रागविलावल॥ मातालेउछंगगोविंदमुष

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कच्छप रूप करो हो ॥४

दैत मारि कै धरा राषि आनि धरि सोही ४

रिसुत जाये ॥ पुनहू जन्म गुन कर्म नंदजू कहौ जथामति बानी ॥ ब्रह्मा
दिक सनकादिक सिवादिक वेदन हू नहि जानी ॥ जो विराट पुरुष पुरुषोतम त्रिविधि
नाम गुन धारी ॥ नारायन अवतार हंस भये दत्तात्रय मुरारी ॥ हयग्रीव अवतार
मत्स्य भये वपु वाराह धरि सोहो ॥ नरहरि होइ प्रहलाद उबारे वामन वलि छलकी
न्हे ॥ परसराम अवतार राम भए रघुकुल अति सुष दीन्हो ॥ अब हरि भूभार ह
रन कौ हलधर तुम्हारे आये ॥ तिनके गुन अति व्यास महामुनि सत्यव्रत सौं सुत गाये
वकी सकट प्रलंब आदि दै गोवर्धन कर धरि है ॥ द्विरद द्विरद रद तोरि महा
मद कंस वंस वध करि है ॥ बहुरौ बोध अवतार धरहि जे मष हिंसा हितए ही
कल्की कलि के अंत संत है करि है काज वडे ही ॥ और हु बहु जन्म कर्म तव सुत के का
पै जात वषाने ॥ लहैन अंत कंत गोरी को सेस सहस मुष गाने ॥ बडो विरद मैं सु
न्यो तुम्हारो महादानि जगदाता ॥ तातें सकल कुटुंब लै आपो मागन इतनी बाता
लिषि दीजै ब्रजनाथ हाप सो इतनी लीक सुनांउ ॥ महरि हि यमरि हार अ
मोलिक यहौ त्याग मै पांउ ॥ तात वेला सत धेनु दूध की इतनी लीक हमारि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

दन तन हेरे॥ तुलसीदास प्रभु कहे ते बातै जे कहि भजे सवेरे॥३॥ मो क
हु झूठेहु दोस लगावहि॥ मैया इन्ह हि बानि पर ग्रह की नाना जुगुति
बनावहि॥ इन्हके लीये षेलिवो छाडो तउ न उबरन पावहि॥ भाजन
फोरि बोरि कर गोरस देन उरहनो आवहि॥ कबहु बाल रोवा
इ पानि गहि एहि मिसु करि उठि धावहि॥ करहि आपु सिर धर
हि आनके बचन बीरंचि हरावहि॥ मेरी टेव बुझि हलधर सो सं
तत संग षेलावहि॥ जो अन्याउ करै काहु ते सिसु मोहि न भा
वहि॥ सुनि सुनि बचन चातुरी ग्वालिनि हसि हसि बदन दुरावहि
३ बाल गोपाल केलि कल कीरति तुलसीदास मुनि गावहि॥ ॥६॥
कबहु न जात पराये धामहि॥ षेलत ही देषो निज आंगन सदा सहि
त बलरामहि॥ मेरे कहां थाकुर गोरस को नव निधि मंदिर पाम ॥२॥
हि॥ ठाढी ग्वालि परहने के मिसु आ पब कहि बेकामहि॥ होव

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वारवार नीरषे ॥ पुलकित तन आनंद घन छीन लीन मन हरषै ॥ पुछ
त नुत रात वात मातहि जदुराइ ॥ अति से सुष जाते तोहि मोहि कहु सपु
त्राइ ॥ देषत तव वदन कमल मन अनंद होइ ॥ कहै को नरह नि मोन
जानै कोइ कोइ ॥ सुंदर मुष मोहि देषाउ इहा अति मोरे ॥ मम सम मा
न पुन्यपुंज बालक नहीं तोरे ॥ तुलसी प्रभु प्रेमवस्य मनुजरूप धा
री बालकेलि लीला रस व्रजजन हितकारी ॥२॥ राग आसावरी
तोहि स्याम की सपथ जसोदा आय देषु गृह मेरे ॥ जैसो हाल करे प
हठो ढाहो ढनि पहि अनेरो ॥ गोरस हानि सहौ न कहौ कछु पै हि
व्रजवास बसेरो ॥ दिन प्रति भाजन कौन बेसाहै घर नीधि काहू केरो
कीए निहार हंसत षीझे ते डाठ तन एन तरेरो ॥ अब ही ते ए सिषे कहा क
हा ते चरित ललित सुत तेरो ॥ बैठे सकुचि साध भयो चाहत मातु व

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

१ ॥ ८ ॥

भवरगी त ॥ हि देषो तुम्ह सो कहो अब ना कहि आई कौन दिन हि दीन हीजे ॥ ग्वालि
नि तौ गोरस सुधि ताकी तुम्ह ऐसो जीजै ॥ सुत सम मेत पा उधारि पे आपु
हि भवन मे देषिये जौन पातिजे ॥ अति अनीति नीकी न हि अज
हु सिष दीजे ॥ तुलसीदास प्रभु सों कहो उर लाय जसोमति ऐसी
बलिक बहुन कीजे ॥ ८ ॥ अब हि बरह नो दे गई बहुरो फिरि आई
सुनु मैया तेरी सों करो पाकोट बलरेन की सकुचे बेचि पिषाई
पाव, जम मेलरी का घन हों हि अन्हाई ॥ मुह लाये मूंडहि चढी अंत
हु अहिरि नि तूं सुधी करि पाई ॥ सुनि सुत की अति चतुराई ज
सुमति मुसकाई ॥ तुलसीदास ग्वालिनि ठगी आयो न उतरु
कछु कान्ह ठगोरी लाई ॥ ९ ॥ रागगौरी ॥ अब ब्रज वास महरि कैसे
जीबो दुध दही माषन ढारत है ॥ ता सुसात दादिन दिबो ॥ ८
अब तो कठिन कान्ह के करतब तुम्ह हो हसत कहा कहि लोबो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लिजाछ्नाहकीतहूजानिमातुसीपावतस्यामहि॥ विनुकारन
हरिदोसलेगावेतातजातगहतामहिं॥ हरिमुषनिरषिपहेष
वानीसुनिअधिकअधिकअभिरामहि॥ तुलसीदासप्रभदेषी
पाहतश्रीमुषललितललामहि॥५॥ अवसवसांचीकाहति
हाति॥ जौहमतजेपापगपमोहनेगहेआपदेगाति॥ सिसुति
सतीतासकुचिहषेमुषवातेसकलेसवाति॥ साधुजानिहसि
हृदैलगावतपरमप्रेममहताति॥ कोटिजतनकेरिसपपा
वहैहममांनेकोनहमाति॥ तुम्हहिविलोकिआनकोऐसोकैसो
कहिहैवरनाति॥ जैसहोतैसेसुषदापकवृजनापकेवलिहानी
तुलसीदासप्रभुमुषसविनीरषतमनसवजुगुतिविसानी॥७॥
रागकेदार॥ महरितिहारेपापपरोअपनोवृजलीजे॥ स

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ढि विवाद तनआइ अगाउ॥ पाहि कहां मै आमुह लोवनगनती कौ पकलेग
री ऊगनाउ। कहत परसपर वचन जसोमति लखि नहि सकति कपटस
ति भाउ॥ तुलसीदास ग्वालिनि अति नागरि — नट नागर मनि
॥५॥ नंदलला उ॥१३॥ हाँ ऽ मेरे ललन ललित लनिकाई॥ ऐहे सुत दे
खुषा काल्ह तेरे व्यावे व्याह कौ वात चलाइ॥ ३ विहे सासुस मुनि सौ नीसु
नि हसि है नरहुलहि आमोहाइ॥ उवटन हाउ गुहौ चोटि आवलि
दषि भलो वन कैनहि वडाइ॥ मातु कहत करि मुलो चोटि जमे वडी वा
न काल्हि तो न आइ॥ जव सोइवो तात पो कहा कहि न पन मोजि रहे
पौढि कन्हाइ॥ उठि कह्यो भोरहम पे ऊगुली है मुदित महरि लखि आ
तुरताइ॥ विहसी ग्वालि जानि तुलसी प्रभु सकुचि लगे जननी उर धा ॥५॥
ई॥१४॥ हरि को ललित वदन निहारु॥ नीपट हीऽ ढत नि ठुर ज्यो
लकुट कै न ते स्यामु॥ मंजु अंगुन सहित जलकनि [illegible] निचुर

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सी जैसें गांउ नांउ लै एवरो है जगठांउ कहहुं जीवो ॥ ग्वालि वचन मुनि कह
त जसोदा मलेन मुखि परे आदर हीवो ॥ हे पहिलागि कहे तुलसी प्रभु अजहुन
तजत पग्गा धर पीवो ॥१०॥ जानिहै ग्वालिं परी फिरि फीकी । मात काज लगि
त८ लषि डाटै है वापे नादपो धरनी को ॥ अब कहि देउ कहनि कहियो कही माग
त दहौ धनो जो है छीको । तुलसी प्रभु मुष निरषि [illegible] वकित हो परहो
ııन न सयान पन नीको ॥११॥ जौलौं हौ कान्ह रहौ गुन गोपे । तौलौं तुम्ह
हि पत्यात लोग सब सुनु कि सभीत सो बुझत पे ॥ हौं भले नंग फग परेग
ढि वै अब पग ढत महरि मुष जो पे ॥ तुप कि नर हत कहो कछु चाहत हो
है कीच कोटि ल्योधो पे ॥ जर जन कहात रजनी तर जत वर जत सपने के कोपे
तुलसी मुदित मात सुत गति लषि विथकि है [illegible] ग्वालि मनन मन मो
पे ॥१२॥ मुलि न जात हौं को उ के काउ ॥ सापिन साल सव सुवलसुदमा द
षि वो वूझि वो लि वलदा उ ॥ यह तो मोहि षिजाए कोटि विधि उल

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

कहै सुकृती नंदजसु मतिसमनन मयोन माचीन हीचीस समान वीयो है॥कौन जा
नैकौ नेतपकौ नेजोग जाग जप कान्हसासुत नतीको महादेव दयो है॥इन्ही
के आपे तव धापे वृजनितन पनाद तवाठ नसबसब सुबजी यो है॥नंद ला
लवाल जस संत सुर सरवस गापसा अभीर सुतुलसी हुं पियो है॥१७॥ल
॥६॥ लितलालै निहारि महरि मनै विचारि जारिदे ब्र रखसीलै कुठवे गेकरते॥
कछु न कहीं सकत सुसुकि न सकुचत डरत कान्हे डरे तेरा इनते॥कहो मे
ते मानि हित जानि तुम सयानी वडे वडे भाग पायो पुत बिद्धि हरि हनते॥ता
हिवाद्धियो को धाइ ग्वालिनी गोरस महारे लैलै आइ वेंरी दोव लिघरघर
ते॥कुलगुरु तीयाके वचन कैमनीपसु लिसुधी मये व ब्रनमे सुने मुनि
वरते॥ह्वारिल पोलायो ठनवरघे सुमन नसुर मंगलमै तिहुं पुर रहि रहि
लधरते॥अनंद वधायो नो मुदित जा पगो चौगन आजु परि कुसल कढि
नकरि वरते॥तुलसी जे तोरि तह कियो देव दियो वह है नलहो कौन पर ॥६॥
हदेव दमोदरते॥१८॥ गम सार॥वृजपर ब्रह्म नघर सड करि आये॥अ

6

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

स्याम गात मन मग मनो ससि सरद सुधा री गातु ॥ ३६ मग

तलोचन चाहैं ॥ मन हु मरकत मधु सिप पर लसत विसद तुसार ॥ कान्ह हु
परसत तर मोहै महरि मन नहि विचारु ॥ दास तुलसी रहत कौ री सनिर वि
नंदकुमारु ॥ २५ ॥ लोचन भरि भरि नीर कीन्हे कमल पनपन ॥ फन के अध
र निरषि लकुटी कर कहि न सकत के छुव पन ॥ दुसह दावनि हो तिषो
पो रिपावि के ताकी न्हौ बीन्हो रिमु भाउ तें ले आनु लगे माइ मैन ॥ तुल
सी दास नंदलाल को ललित वदन लखि निधारहत उर ऐन ॥ ह
ला हानी महनि वारो कहा तीस वस भा को षि के जापे सो नीम के तो
व उको यो है ॥ ठौलि कनिदा वनि वाव विसा वर देषी सकु चिस ह
मिसी सुभानी भप मिपो है ॥ दुध दधि माषं न मोला घ न जो ध
न जव ते जनन महल धरह निलीयो है ॥ घापो के घ वा पो के पी
गा स्यो ठा यो लत्तिका री ऐसे: सुत पर के हो कै सो त रते हि पो है ॥ सुनि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...र ...त अरंगविहंग जो है ॥श्रीराम...

गावत गोपाल लाल नीके राग नट है ॥ चली री आली देषन लोयन लाहु
॥७॥ वेषन ठाठे सुरतरु तरतरि नीके नट है ॥१॥ मोरचंद चारु सिर मंजु
गुंजपुंज धारे वनि वनधातु तन ओढे पीत पट है ॥ मुरली तान तरंग मो
है सुर त्रिभंगनी पट लिकट है ॥२॥ अंबर अमर हरषत बरषत फूल
सोधि लसनेह गोप गाइन के ठठ है ॥ तुलसी प्रभु निहारि जे ललित हो
ब्रजनारि ठगी ठाडी मगली पीरी ते मरे घट है ॥३॥ देषु सषी हरि बदन
इन्दु पर ॥ चीक्कन कुटिल अलक अवली छवि कहि न जात सोभा अनु
7 पवर ॥१॥ बाल भुअंगिनि मन हु निकर मिलि है विरहो रस जानि सुधा
कर ॥ तजि न सकहि नहि करहि पान कहु कारन कौन विचारि डरहि डे
र २ अरुन वन जलोचन कपोल सुबि श्रुति मंडित कुंडल अति सुंदर
मन हुसी धुतिज मृत तहि मनावत पठये जुगल ... वारिचर ॥३॥ ॥७॥
नंदनंदन मुष की सुंदरता कहि न सकहि श्रुति सत उमावर ॥४॥

वृति छर

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तिअपमानविचारिआपनोकोपिसुरेसपठाए ॥ दसकतदुसहदसउदिसिदामि
निमपोतमगगनगंभीर ॥ गरजतघोरवारिधरधावतप्रेरितप्रवलसमीर ॥
वारवारपविपाततउपलघनवरषतवुंदविसाल ॥ सीतसभीतपुकेरतआ
रतगोसुतगोपीग्वाल ॥ रापहुरामकान्हयहिऔसरदसहदसाभैआइ ॥
नंदविरतघकीपासुरपतिसोंसोतुम्हरीवलुपाइ ॥ सुनिहसिउठनंदको
नाहलिपोकरकुधरउठाइ ॥ तुलसीदासमघवाअपनोसवकरिगो गा॰
गर्ववगारिवांइ ॥ ९९ ॥ रागगौरी ॥ इतिकान्हगोधनचरिगेपा ॥ मथ
मपिपियोवारवारिकभेभूंषनजातिअघातनहेपा ॥ सघतलसिघरच
ढिचितैचकितचीतअतिहितवचनकहोवलतेपा ॥ वांकिलकुटप
ठपरिवोलाइसुनिकलवेनुधेनुधुकिधेपा ॥ वलदाऊदेषिदुरितेपत
आवतद्वाकेपठाइ [illegible] भेपा ॥ किलकिसघासववनठतमोरमोकेदत
कपिकुरंगकीनेपा ॥ घलतघातपरसपरडहकतछिनतकहतेकर
तवरितेपा ॥ तुलसीवालकेलिसुघनीरघतवरघतसमनसहितसु

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

लोकाभिराममनोहरं कौजल्लकवसनकीसारमुनतिमुरिगुनकंजना
कं२ सोरकेकिपहंविलोलकुंडलअनुनवनतुहलोचनं गुंजावतंस
२ कीचित्रसवअंगधातुभवभयमोचनं ३ कटिकुटिलसुंदरमूलक
मुराकामपंकेसमानन अपहरनतुलसीदासत्रासविहारविंदाका
ननं ४ बिनुरतभीवजनराजमाजुईजनपननकीप्रतितिगई उ प
ठिनलगहरिसंगसहजनजिहोनगपेमसोस्यामभई १ नूरतिकेला
8 लवीकलावृतसोकंरनीकहुतोनभई सोवेहुजरकुटिलसित मेच
कव,चामीनहविन्तीनलई २ अवकाहेकोसोचतमोचतजलस
मगतवीतमुलनई तुलसीदासतवअजहुतेमपेजउजवपलके २
निहठिदागदई ३ नहीकहुदोससामकोमाई जोदुषमैपा
येसुनुसजनीसोतौसवैमनकीचतुराई १ निजहितलागित
वहिपहिवंचकसवअंगनिवासिप्रीतिवढाई लपौमोसकेल

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तुलसीदास त्रैलोक्य विमोहन रूप कपट नर त्रीविद्धि सूलहर ६ आजु
उनीदे आये मुरारि आलसवंत सुभग लोचन सखि छीन मुदत छिन
देत उघारि १ मनहु इन्दु पर खंजरीट दोउ कछुक अरुन विधि रचे
सवारि कुटिल अलक जनु मार फंद कर गहे मनहु सजग होइ रहे
सभारि २ मनहु उड़न चाहत अति चंचल पलक पंख छिन देत उ
पसारि नासिका कीर वचन पिक सुनि करि संगति मनु गुनि रहत वि
चारि ३ रुचिर कपोल चारु कुंडल वर भ्रकुटी सरासन की अनुहारि
परम चपल तेहि त्रास मनहु खग प्रगटत दुरत न मानत हारि ४
जदुपति मुख छवि कल्प कोटि लगि कहि न जात जाके मुख चारि तु
लसीदास तेहि निरखि ग्वालिनी भजी तात पति तनय विसारि ५
राम ॥ गोपाल गोकुल वल्लवी प्रिय गोप गोसुत वल्लभं चरणारविं
द महं भजे भजनीय सुर मुनि दुर्लभं १ घनस्याम काम अनेक छवि

कुचालितवसनारि विषसेविषमविनैअनहितकोसुधासनेहीगारि मनकेरि
अतिकुतरकेकोटिकरिकूबलमतेसोमारि तुलसीजगदूसरोनदाखिपतके
न्हेकुवरअनुहारि २९ रागकेदारा लागीअँरहतीनयननआगेतेनटरतीमो
हनमुरति नीलनलिनस्यामसोभाअगिनितकामपावनहृदयजेहिउरकु
रति सारदअमितसेषकहिनसकतअंगअंगसुनीति तुलसीदासबडेभाग
मनलागहुतोसबसुखपुरति ३० जबतेवजनतजिगवेकन्हाइ तबतेवि
रहरविउदितएकरससखिविछुरननहिपाई धुटतनतेजबलतनाहिन
रथिरहोनमऊरपरमाई इतीनूपतासिसोचहिःसुठिसबकीसुधिविसरा
९ इ मएविसोककोककोकनदभ्रमभ्रमरनसुखदाई चितचकोरतनमो
रकुमुदमुदसकलविकलअधिकाई ततनतडागबलबारिसूखनलसो
पतीकुनूपताकाई प्रानमीनदिनदिनदुबनहोइदसादुसहअधिकाई
तुलसीदासमनोरथमएमृगमरतजहःतहँधाई रामस्यामसावन १७
मादेविनजियकीजरनिनजाई ३१ ससितेसीलमोकोलागेमाईरीतर
नि सकेउपवरतिअंगअंगदवबाकेउपेमिटतरजनीनीतमरलै

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सुषद निकुंजसंगकोजहं जोविधितहंसोईवनिआई॥२॥ अवनंदलालगवनतुं
निमधुवनतनहितजतनहिवारलगाई॥ उचिरचूपजलभौंरसलोमिलिनहि
न फिरकी वातचलाई॥३॥ पुहिसरीरवसिसधीपासठकेहुकहिनजातमनोनि
छिपरछिआई तदपिकहुउन्हकारराकीन्होनिजमिलेंनोनाहि मोहिसोपाई ८
आपुमिलोवहिभातिजातितजितनमिलिहहुजलपैकीनाई॥ हैमरालआ
योसुफलकसुतलैगयोनीरक्षीरबीलगाई ५ मनहोतजीकाहेंहेंसागोपु
नहुचलिहैपरमितपाई तुलसीदासरीतितनउपरनयननकीमनेताअधि
काई ६ रा धनाश्री करिहैहूनिवालककीसीकेलि हनघुनरखतविगाद
नवीवरतउगविचलेहसिचली १ वइवनायपयारिवृंदावनफुंतिसजीवनिवे
स्री सीचिसनेहसुधासानिकाठालोकवेदपरहेली २ तनज्योतजीपालित
तुज्योहमविछिवासवचलपलि रतहुपरभावततुलसीप्रभुगवेमोहनीमे
ली ३ अलिअवकहुनिजनेहनिहारौं समुझेनहेहमारोहेहितविधिया
मतोविचानि सत्यसनेहसीलसोभासुषसवगुनउदधिअधानि दओ
सुनेउनकबहुकाहू मीनवियोगिनिवानि कहिप्रतकाकुकूवरीहूं को सो

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ढि आपनी जोग कथा विस्तारो जा कारन पठए तुम्ह माधौ सो साचौ मन माहीं केत
कलीच विरह परमारथ जानत हो किधौं नाहीं परम चतुर निज दास स्याम के सं
तत निकट रहत हो जल बूडत अवलंब फेन की फिरि फिरि का गहत हो वह अ १०
१० ति ललित मनोहर आनन कौनें जतन बिसारो जोग जुगुति अरु मुकुति वि
विधि विधि वा मुरली पर वारौ जेहि उर बसत स्याम सुंदर वर तह निर्गुन
कैसे आवै तुलसिदास सो भजन वहावो जाहि दुसरो भावै ॥ ३५ ॥ मधु
कर कहहु कहन जो पारो नाहिन बलि अपराध आपनो सकुचि साधु जन नि
मारो नाहिं तुम्ह ब्रजवासि नंदलाल को बाल विनोद निहारो नाहिन रास
रसक रस चाख्यौ ताते ढेल सो डारो तुलसी जो न गए प्रीतम संग प्रान त्या
गि तनु न्यारो तो सुनि वाद विवो वहत अब कहा करम सो चारो ३६ ऊधो
कहो तो हारो को नौ जो के जिय की जानि अपन पो समुझि सिषावन दी
बो स्याम वियोगी ब्रज के लोगन जोग जोग जो जानो तो सकोच परिहरि
पालागौ परमारथ हि बषानो गोपी ग्वाल गाइ गो सुत सब रहत हैं प

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सबविपरीतभयेमाधौविनहितजोकरतअनहितकीकरनि तुलसीदाससामसुंदरं
विरहकीदुसहदसासोमोपैपरतनहिवरनि ३० संततदुखदसुधीरजनीकर
ह्वारपरततयअबहुपैकरसमोकोकबहुनभयौतापहर निजअंसीकसुखलागि
चतुरअतिकीन्हीहेप्रथमनीसासुभसुंदर अबविनुमनतनदहतदपातजिर
पतरविरहोनपनवारिधर जदपिहेदानुनवडवानलरख्योहैजलधिगंभीर
धीरधर तातेपरमकठिनजान्योसखितज्योपितातबभयौअमनचर सकल
वीकारकोसबिरहिनिरिपुकाहेतपाहिसतहतसुरनर तुलसीदासत्रिलोकमा
न्यभयोकारनयाहीगह्योगिरिजावर ३१ रा मला कोउसखीनईपची
हसुनिआई एहव्रजभुंमिसकलसुरपतिसोमदनमिलिकरिपाई घेन
धावनिवगपांतिपटासिरवेरघतहितसोहाई वोलतपिकनकीवगरजनि
मिसुमानहफिरतदोहाई चातकमोरचकोरमधुपसुकसुमनसमुहसहा
ई चाहतकीयाबासवृंदावनविधिसोकहुनवसाई सिरनपाबिसकी
तवकोउजवहुतेरामकन्हाई अबतुलसीगिरधरविनुगोकुलकोनक
रइठकुराई ३२ रागमारु ऊधौब्रजकीदसाविचारो तापीतेयहसि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रागमलार जौपैअलीअंतइहैकरिबोहै तौअतुलितअहीरअबलनकोहठिनहि
हरिबोहो जौपरंपचप्रनामप्रेमकरिअनुचितआचरिबोहो तौमधुपुरहिमहामहि ११
मोलहिसकलठरनिठरिबोहो देकुबरीहिनृपबजमुद्धिमपोलौकीकडनडनबो
११ हो सोनविरागकालहृतकमतवहमगेसिनधनिबोहो उनहिरागरविनीर
दजलज्योप्रभुपगमितिपनिबोहो हमहनिठुरनिरउपाधिनेहनिद्धिनिज
भुजबलतरिबोहो मलोमयोसवेभातिहमानेएकवारमरिबोहो तुल
11 सीकान्हविरहनितनवजोजरिजीवनमरिबोहो ६९ उधोइहस्यानकहेहम
हिवेही सानजीरावुवतीरावनकीमुनिविचारिगरिबेही पापजोएनापं
सिरगुहहेगतिपरमितिलहिवेही मणिमधुकीमृगजलभरिघतहितम
नहीमनतमहिवेही गाउमलीउचरेअनुचितवनिआचेकहिवेही तुलसी
प्रभुहितुम्हहिहमहूहिपहस्वासतिसहिवेही ७२ मधुपतुम्हकान्हहीकोकहि
कौनकहिपे येहबतकहीचपलचेगीकीनिपट्विचेरीओनहीहे कवबजतजो
सानकवउपजौकेवविदेहतालहीहे गयेबिसारिनीतिगोकुलकीअबनिगुन

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अनुरागे दीनमलीनहीनतन डोलैमीनमजासेलागे तुलसीहैसनेहदुषदापक
नहीजानतअसकोहै तउनहोतकान्हकोसोमनसवहिसोहिवहिसोहै ३१ रागवि
लावल सोकहोमधुपजोमोहनकहिपठई तुमभजतेभजतहोहिनीकेजैनतन
दनंदनहोनिपटिकरिसठई हतोनसोचोसनेहमीठपेमनकोसंदेहहनिपरेउघटि
संदेसहुठठई तुलसीदासकोनआसमीलनकीकहिगएकहुसोतोपेकोनचित
ठई ३२ मेरेजानऔनकुसुनमनगुनिपे कुवनीरवनकान्हकहीजोमधुपसो
सोइसिषसजनीसुचितदैसुनिपे काहेकोकरतिरोसुदैहेघोकोनकोसमुनिजन
पननीकेवपोसवसुनीपे दानुसमीरकीरूपहिलेसुषसुमितिसुमितिपासरनि
सिधुनिपे पेसनेहसुचिअधिकअधिकसुचिवनऔनकरतकोतोसिरधुनिपे
तुलसीदासअवनंदसुवनहितविपविपोगअनलतनहनिपे ३३ सासक
होंआलीहमपहिचाने हरिनिगुननीरसपतिरापनेनीपटिनिठुरनिजकाजस
पाने वजकोविरहअरुसंगमहरिकोकुवरीहीवरतननेकुलजाने ससुनि
सोप्रीतिकीरीतिस्यामकोसोरवावतिपरचेउरजाने सुनततनसिवलालचवी
विलोयनपेनेहुपरउचिरूपलोमाने तुलसीदासइहअधिककान्हपहनीकरल

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

घगमनगमीनसलमनमनसिजगतिप्रुनिपाहनोपसीजै उधोपनमहीतूहीतसिव
वतपनसितपहचिपतीजै तुलसीदासअपराधआपनोनंदलोलविनुजीजै
४२॥ उधोवरकैहैसोकीजै अलिपहियानिप्रेमकीपनमितिउतनुपेनिनहि
दीजै जननीजनकजेठनजानेजनपनिजनलोगनहीजै देपठपेपहिलेव
जवुडतसादरानिनधनिलीजै कंसमानिजदुवंसमुखीकीपेअवनपुजस १२
पुनिलीजै तुलसीत्यौंत्यौंहोयगीगनुइज्योंज्योंकाननिमीजै ४७॥ कान्हअ
लिनपेमपगुनमानी तुम्हसेकहाआपनेसमुझतवातसहीउनआनी लो
पेअपनापलोपवंदनतनकेहकुचाहउगनी जतिप्रुधापकुवनीकोन
ककरीजोगविधाधानी वृजवासिरासवीलासमधुपुनीचवीसोनतिमानी
जोगजोगग्वालिनिविजोगिनीसानप्राननिगानी कहिवेकसुकहुकहिजैहै
हेआलिअवगानी तुलसीहाथपरायेप्रीतमतुम्हप्रियहाथवीकानी ४८
नवमिलिसहसाकवीपसपानी वृजआनिपेमनायपापपनिकान्हकुवनी
नी वसेसुवासमनुपामहोयसवफिनिगोकुलनजधानी महनिमहनि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गहिहैं आपसुदेहकरहिसोइ सिवधनिप्रतिपनमितिनिनचहिहै तुलसी
नमेसुननसहैगोहमैंअवलनिसवसहिहै ६३ दीन्हीहेमधुपसनचहिसि
नीकी सोइआदसोंआसजाकेजिपवानिविलोचनथीकी कुमीवातकान्हकु
नीकीमधुपकेनहुजनिपुहो डालीश्वालिसानपठइअलिकलौहेपत्तो
ननसुको हमहुकेसुकलपिहितवकीओनवेनंदललाकी पेअवलहि
वनुनचेरीपेवोघीयाहिचलाकी जपेकनतेधनतेआगनतेवसतोव, जनी,
स तुलसीप्रभुगइलिनघेतमनहुतेसोतोहेहमानेहाथ ६४ ताकोसिव
व,मनलसुनैकोउमोने जाकीकहनिनहानिअनेमिलिअलीसुनतसमुस्सिप
तथोने आपुकंजमकरंदसुधाव,तहिदयनहतानितवोने हमकोंकहेंहि
विरहश्रमजैहेगगनकूपखनिघोने धानकोंगांउपपारजानिपतसान
विपयनमोने तुलसीअधिककहेतनहेनसुगुलनिकेफलफोने ६५
अलिअतिअनुचितउतनुसोदीजे सेवकसवासनेहीहनिकेजोकछुहेसोकीजे
कउपदेससदासोसादनसोसुनिलीजे केसमुझेवोकीपसमुझैहिहै
मानिलहीजै सखिसनीनहिपैअधिकवीचागततप्रेमपीनप्रनकीजै
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अरी अजहु नहि बुझत कौन हेत नंदलाल पठाये ५१ कौन सुनै अली की चतुरा
ई अपनी मति विलास अकास मेवा हत तिहि निबलाई सरल सुलभ हरि भ
क्ति सुधाकर निगम पुरान नगाई तजि सोइ सुधा मनोरथ करि करि कौन सरिहै
२३ ति माई जद पिता के लोइ मार गप्रूप जाहि जहा वनि आई मधुप न के सदन कुली
न के मोदक कहत सुनत बौराई सगुन छीर नीधि तीर बसत बृज तिहु पुर बि
१२ ति पठाये. अर्क दुहन तुम के लौ पोष परिहरि ऐह मति हमन ही पाई जानत १२
है जदुनाथ सबन की बुद्धि बिबेक जडताई तुलसीदास जानि य कहिं मधुप सठ हठ
निसुदिन अगराई ५२ राग केदारा गोकुल प्रीति रीति निनई जानी जाई सब अनताहु
नाई मम मधुकर ताल नगीर पुराती मिलहि जोग जरठ तिन्हहि देखाउ निरगुन
पाति नवल नंद कुमार के बृज सगुन सुजस बखानि तजो हम आदि सो लो
लोन वक कमलहि की घानि तजहि तुलसी समुझि येह उपदेस वे की बानि ५३
...के कहत वचन सवाँरि सा नेगा हकु नाहि ने बृज मधुप अनत सिधारि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

[illegible]गहिं वैपुषजी नतिषुलहिमोदमनमानी तजिअभिमानअनघअपनेहितकी
[illegible]नमेनमुनिवरवानी देषवैदनसदुसरेहचौथेवडोलोभलघुहानी पावकप
[illegible]नी तनविदवलोकतिहोतअनलजगजानी तुलसीसोतिहुभुवनमानवी
नंदसुवनमनमानी ४९ कहिहैभलीवातसवकेमनमानी प्रियरामप्रि
यपनेहभाजनसषाप्रीतिरीतिजगजानी भूषनभूतिगरलपरिहरिकै
हरभुरतिउरआनी मज्जनपानकीयेकैसुरसरिकर्मनासाजलछानी
पुछसोप्रमविरोधसीगसोप्रहविचारिहितजानी कीजैकान्हकुवरीसो
नितनेहकर्ममनवानी तुलसीतजीयकुचालिआलिअववधिवेस्यामस
आगेकरिमधुकरमथुराकहसोढियसुदिनसयानी ॥५०॥ हेहमसमाचा
रसवपाये अववविसषिदेषतुम्हदेषेहैकुवरीहाकसीलाये नेधुनावडा
नगरनागरनजनुजोहजातहिजदुनाथपठाये समुझिरहहिनिसुनिकहातिवि
रहकीअनघअमीओषधसमुझाये मधुकररसिकसिरोमनिकहियतकौ
नेयहरसरीतिसीषाये विनुआषनकोसीतगाइगाइवाहतग्वालिनिग्वाल
तिजाये फलपहिलहितपोवजवासीनअवसाधनउपदेसनआये तुलसी

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नारे अवधिजराजोरतहठिपुनिपुनिप्रानतेरहतसहतदुखभारे पावकविरहस
मीरस्वासतनतूलमिलेतुमजारनिहारे तिन्हहिनिदरिअपनेहितकारनराष
ननपननिपुनरषवारे जीवतकठिनमरनकीवहगतिदुसहविपतिव्रजना
थनेवारे तुलसीदासपेहदसाजानिजिया उचितहोयसोकहेवलिप्पारे ५७
सपदसुनहिवरचवनहमारे विनुव्रजनाथतापपोतनकीकैनहरैहरिअंत १६
रकारे कनककुंभभरिभरिपिउषजलवरषतसकुवल्मसतहारे केदली
१६ सीपचात्रीककोकारजस्वातिवारिविनुकोउनसवारे सवअंगरुचिरकिसोर
२४ स्यामघनजेहिहितद्विजलजवसतहरिप्यारे तेहिउरकोसमानविराटपपु
जेहिमहिसरितसींधुगिरिभारे वर्धौअतिप्रेमपुलपकेपटजैविपुलजे
गजलवोरिनपारे तुलसीदासव्रजवनितनकोव्रतुसमरपकोकरिजतन
निवारे ५८ मधुपसमुझिदेषहुमनमाही प्रेमपिउषरूपउडपतिविनु
नसहेअलिअंगारविपाही जदपितुम्हहिहितलागतलतसनिअवनवध
...हिदपसमाही मिलतिनपवकेनहेतुषारकनजोजोजतमनकस

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सुगुत धूम अधारिये की समुझि [illegible] वारि जोगिजन मुनिमंडली मै जाय रीति
गारि सुनै तिन्ह की कोन तुलसी जो न्है हि जीति न लारि सकत घारो की यो वा ह
त मे बहु की वारि ५४ ऐसो सुनहु जा नो मं ग नाहि ने वा [illegible] सो सुष प्रीति
करि ये क अंग कोन भीर जो नीर दही जेहि ला गिर तबी हंग मीन जल बिनु त
लफि तनु तजै सलिल सहज अ संग पीर कहु नहि मन नहि जाके विरह विकल
मुअंग व्याध विसिष विलोकि नहि कलगान लुबुध कुरंग स्याम घन गुन
15 वारि सविम ति मुरली तान तरंग ल्यो मन बहु भांति तुलसी होय क्यौं रं
सभंग ५५ ऊधो प्रीति करि निरमोहि यासो को न भयो दुख दीन सुनत समुझ
त कहत हम सब भर अति प्रवीन अहि कुरंग पतंग पंकज चकोर चातक मीन
बैठि इन्ह की पांति अब सुष चहत मन मति हीन निठुरता अरु नेह की गति
कठिन परत कहि हीन दास तुलसी सो व नित निज प्रेम जानि नवीन ५६ राग
गौरि सुनत कुलिस सम बचन तिहारे चित दै मधुप सुनहु सो कारन जातें जा
नत प्रान हमारे स्यानहिं पान समान लागत उर विहरत छिन छिन होत नि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham